13/12

(पाठ - 10 वाख)

(कवयित्री - ललद्यद)

रस्सी — — — — — — — — — — — — ...चाह है घेरे

शब्दार्थ - भवसागर - संसार रूपी सागर। कच्चे सकोरे - कच्चे धागे से बना रस्सा। हूक - तड़प, वेदना।

भावार्थ :- कवयित्री कहती है - यह जीवन कच्चे धागे के समान नश्वर अर्थात नष्ट होने वाला है जिसके सहारे मैं प्रभु भक्ति रूपी नाव को खींच रही हूँ। न जाने मेरे देव कब मेरी पुकार को सुनेंगे और मेरा बेड़ा पार कर देंगे।

कवयित्री कहती है कि कच्चे धागे से बनी रस्सी पर पानी की एक-एक बूँद नित्य गिर रही है, अर्थात समय (जीवन) बीतता जा रहा है। मृत्यु पास (नज़दीक) आती जा रही है। प्रभु मिलन के सब प्रयास व्यर्थ हो रहे हैं। कवयित्री कहती है कि मेरे हृदय में रह-रहकर यह तड़प उठ रही है कि मैं कब अपने प्रभु से मिलूँगी अर्थात मुझे कब अपने घर परमात्मा के घर (स्वर्ग) की प्राप्ति होगी।

पाठ - 10 वाख -
— कवयित्री - ललद्यद —

रस्सी ------------- घेरे

पद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न - 'रस्सी' किसके लिए प्रयुक्त हुई है और वह कैसी है?

उत्तर यहाँ 'रस्सी' प्राणों और साँसों के लिए प्रयोग हुई है और वह क्षणभंगुर है क्योंकि वह कच्चे धागे से बनी है। इसी कारण इसके द्वारा भवसागर को पार करना संभव नहीं है।

प्रश्न - कवयित्री किससे क्या पुकार कर रही है?

उत्तर कवयित्री अपने आराध्य देव से पुकार कर कहती है - मेरी नाव संसार रूपी सागर से पार करो।

प्रश्न - 'कच्चे सकोरे' का उदाहरण क्यों दिया गया है?
या
'कच्चे सकोरे' से कवयित्री का क्या आशय है?

उत्तर 'कच्चे सकोरे' मिट्टी के बने होते हैं। जो पानी की बूँद पड़ने से गलकर नष्ट हो जाते हैं। कवयित्री ईश्वर को प्राप्त करने के लिए जिस हठमार्ग को अपनाती है उसके द्वारा ईश्वर को प्राप्त करना अत्यंत कठिन है। जीवन बीतता जा रहा है मृत्यु भी समीप आती जा रही है।

प्रश्न कवयित्री क्या सोचकर तड़प उठती है?

अथवा

कवयित्री के जी में क्या हूक उठती है?

उत्तर कवयित्री को जब यह अहसास होता है कि प्रभु भक्ति एवं प्राप्ति के लिए उसने जिस मार्ग को अपनाया है, वह अत्यंत कठिन है। इस मार्ग के द्वारा उसका जीवन बीता जा रहा लेकिन प्रभु की प्राप्ति नहीं हो रही है। यह सोच कर वह तड़प उठती है।

प्रश्न कवयित्री कच्चे धागे की रस्सी किसे कह रही है?

उत्तर कवयित्री प्राणों और साँसों को कच्चे धागे की रस्सी कह रही है।

प्रश्न- 'नाव' से कवयित्री का क्या तात्पर्य है?

उत्तर 'नाव' से तात्पर्य 'प्रभु भक्ति' से है

प्रश्न कवयित्री किस घर जाने के लिए परेशान है?

उत्तर कवयित्री परमात्मा के घर जाना चाहती है अर्थात् वह इस माया-मोह रूपी संसार से मुक्ति पाने के लिए परेशान है।

प्रश्न- पानी टपकने से कवयित्री का आशय क्या है?

उत्तर पानी टपकने का आशय है- जीवन रूपी रस्सी को गलाने वाला तत्व, अर्थात् काल (मृत्यु) है।